आतंकवाद : कारण निवारण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आतंकवाद का अर्थ हैं– कुछ असामाजिक तत्वों के द्वारा अनुचित साधनों का उपयोग करके हिंसात्मक प्रवृत्ति के द्वारा जनमानस में आंतक उत्पन्न करना। कुछ समूह या संस्था जब बुरे इरादे से लोगों को आतंकित करते हैं तो वे आतंकवाद कहलाता है। विश्व के कई देशों में आतंकवाद विष की तरह फैला हुआ है। आतंकवादियों का उद्देश्य धार्मिक उन्माद फैलाकर समाज में वर्गभेद पैदा करना होता है। आतंकवाद विश्व सभ्यता के लिए सबसे घातक है। जिस–जिस देश में आतंकवाद पनप रहा है। वहां के लोगों का जीवन स्तर घटता चला जा रहा है। आज का युग वैश्वीकरण का युग है। एक स्थान पर घटने वाली घटनाएं बिजली की तरह दूसरे स्थान पर पहुंच जाती है। पहले ऐसा नहीं था। आधुनिक युग में संचारतन्त्र की बढ़ती हुई उपलब्धता के कारण किसी भी देश की घटना दूसरे देश में तत्काल पहुंच जाती है। जिस प्रकार से बुरी चीजों का प्रचार–प्रसार तेजी से होता है उसी प्रकार से अच्छी चीजों का भी प्रचार–प्रसार होना चाहिए। तभी बुराई पर अच्छाई की जीत हो सकती है। आंतकवाद के फैलाव का सबसे बड़ा कारण धार्मिक उन्माद है। कुछ वर्ग विशेष के लोग धर्म को आतंकवाद से जोड़कर मजहबी जामा पहना रहे है। यद्यपि उनका प्रयास यही हैं कि पूरे विश्व को धर्म विशेष से जोड़ दिया जाये, किन्तु ऐसे आतंकवादी अपने इरादे में सफल नहीं हो सकते। बुराई कुछ समय तक बढ़ सकती है, किन्तु अधिक समय तक नहीं बुराई का अन्त होना जरूरी है। आतंकवाद भी एक तरह की बुराई है। आतंकवाद आज एक बहुत बड़ी समस्या बन गया है। विश्व के अनेक देश इस समस्या से ग्रसित हो गये है। कही धर्म के नाम पर, कही सम्प्रदाय के नाम पर, कही देश के किसी हिस्से को तोड़ने के नाम पर, कही किसी देश की सम्प्रभुता को विखंडित करने के नाम पर, कही धर्म निरपेक्षता के नाम पर आतंकवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत एक लोकतंत्रात्मक देश है। इस देश पर कई बार विदेशी आक्रमण हो चुके है। धर्म निरपेक्षता शब्द जोड़ने के पीछे भावना यह थी कि धर्म को केवल व्यक्ति तक सीमित रखा जाये। धर्म को किसी भी रूप में देश के साथ न जोड़ा जाये। परन्तु हुआ इसके ठीक

विपरीत। विगत वर्षों में धर्म निरपेक्षता की व्याख्या उसके वास्तविक उद्देश्य से हटकर की गई है। राजनीतिज्ञों ने इसे अपने स्वार्थ साधन का माध्यम बना लिया है। अल्पसंख्यकों के हितों की दुहाई देते हुए। जिस साम्प्रदायिक तुष्टीकरण की नीति को अपनाया गया है। अल्पसंख्यकों के हितों के नाम पर जातिवाद, सम्प्रदायवाद, धर्मवाद को विकृत रूप में प्रस्तुत कर दिया गया। जिसकी अंतिम परिणति आतंकवाद के रूप में दिखाई दे रही है। भारत में चाहे कश्मीर समस्या हो, पंजाब समस्या रही हो, गोरखालैंड समस्या अथवा अन्य समस्याएं आतंकवाद का तांडव सर्वत्र दिखाई दिया है। कश्मीर में पाकिस्तान आयोजित आतंकवाद वहां के नवयुवकों को धर्म के नाम पर प्रेरित कर हिंसा कराता रहता है। आये दिन सुरक्षाकर्मियों और वहां के स्थानीय नागरिकों तथा दो चार आतंकवादियों की दुष्प्रेरणा से हत्याएं होती रहती है। सुरक्षाबल बहुत ही संयम पूर्वक काम करते है। भारतीय लोकतंत्र को साम्प्रदायिकता के हिसाब से मुक्त कराने के लिए बहुत प्रयास किये जा रहे है। भारत में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों में व्याप्त सभी प्रकार के संदेह अविश्वास और अपने भविष्य के प्रति उत्पन्न आशंकाओं को समाप्त करने की दिशा में प्रयास किये जा रहे है। संवैधानिक व्यवस्थाओं और उदात्त घोषणाओं के बाद भी साम्प्रदायिकता एवं उससे उत्पन्न हिंसात्मक दंगों के प्रति देश में चिंता जताई जाती है। भारत के विभाजन के मूल में दो धर्मों की सांस्कृतिक पहचान का आग्रह था। परन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि सांस्कृतिक चिंताएं राजनीतिक शक्ति को अर्जित करने की चिंताएं बन गयी। इस प्रकार देश के विभाजन के बाद साम्प्रदायिकता राजनीतिक हथियार के रूप में देखी जाने लगी। जो लोग साम्प्रदायिकता को धार्मिक समस्या के रूप में लेते है वे यह भूल जाते है कि साम्प्रदायिकता की वैशाखी राजनीति है। इससे अधिक बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि भारत में वोट की राजनीति ने सत्ता प्राप्त करने के लिए सदैव साम्प्रदायिक शक्तियों का सहारा लिया है। वोट की राजनीति के कारण रिश्ते इतने विकृत हो गये है कि धर्म का अस्तित्व ही नहीं रहा है न राजनीति का धर्म है और न धर्म की राजनीति है। केवल सम्प्रदाय और कट्टर साम्प्रदायिक भावनाएं हमारी नियत बनकर रह गयी है। जब एक सम्प्रदाय सुनियोजित ढ़ंग से धार्मिक–सांस्कृतिक भेदों के आधार पर राजनीतिक मांगे रखने का निर्णय करता है तब साम्प्रदायिक चेतना सम्प्रदायवाद के रूप में एक राजनीतिक सिद्धांत बन जाती

है। सत्ता और साम्प्रदायिकता के इस अपवित्र गठबंधन में धर्म निरपेक्षता की जड़े खोखली कर दी है। राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए किसी वर्ग को अपनी सांस्कृतिक पहचान खोने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु जहां देश की एकता और प्रसन्नता का प्रश्न उठता है, वहां प्रत्येक की राष्ट्रीयता केवल भारतीय होनी चाहिए। हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई नहीं। आतंकवाद की समस्या का एक बहुत बड़ा कारण बेरोजगारी भी है। जब पढ़े–लिखे लोगों को रोजगार नहीं मिलता तो वे असामाजिक बन जाते हैं। शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा, रोटी, कपड़ा और मकान की सुविधा प्रदान कर लोगों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जाना चाहिए। आतंकवाद को एक सामाजिक बुराई के रूप में देखा जाना चाहिए।